Sanskrit (Hons)
B.A. (Part)

डॉ० [illegible]
असिस्टेंट प्रोफेसर
आर. बी. एस. कॉलेज, [illegible]
बेगूसराय

(Final Pattern)

मेघदूतम्

पूर्व में बताया गया है कि महाकवि कालिदास ने अपने खण्डकाव्य मेघदूत में अपनी वर्णन-चतुरता एवं अद्भुत लालित्य का प्रदर्शन किया है। इनका वर्णन-लालित्य ही है जो हमें मेघदूत की छोटी सी कहानी को भी ग्रन्थाकार बनाने लायक है एवं इसे विश्व के सर्व श्रेष्ठ साहित्य की पुस्तकों में शामिल करती है। महाकवि कालिदास ने अपने मेघदूत के एक छोटी सी घटना को अत्यन्त लालित्यपूर्ण ढंग से वर्णित किया है और वास्तव में यह वर्णन इतना लालित्यपूर्ण हो गया है कि खण्ड-काव्य की परिभाषा ही मेघदूत को देखकर दी जाने लगी। वैसे भी महाकवि कालिदास के ग्रन्थों की विशेषता है कि उनके ग्रन्थों के आधार पर ही उन विद्वानों की परिभाषाएँ

गढ़ी गई। जैसे महाकवि कालिदास की विश्वविजयी नाट्य रचना अभिज्ञान शाकुंतलम् को आधार बनाकर ही नाटकों की परिभाषा गढ़ी गई। इसी प्रकार महाकवि कालिदास की काव्यक रचना 'रघुवंशम्' के आधार पर ही महाकाव्यों की परिभाषा गढ़ दी गई है। इसका कारण यह है कि अपने प्रारम्भिक काल में काव्यों या नाटकों की कोई निश्चित परिभाषा नहीं थी। काव्यशास्त्र या अलंकारशास्त्र का निर्माण बाद में हुआ। अतः विश्वविजयी रचनाओं के आधार पर ही उनकी परिभाषाएँ गढ़ ली गईं। इसी क्रम में रघुवंश भी आगामी काव्यों के लिए एक प्रतीक बन गया तथा इसे रूपक काव्य की श्रेणी में उच्च स्थान प्रदान किया गया।

Rutesh Ram